।। हरिः ॐ ।।

श्रीकेशवानंदजी
(श्रीधूनीवाले दादा)
(साँईखेडा-खंडवा)

श्रीसाँईबाबा
(शिरडी)

श्रीछोटे दादा
(खंडवा)

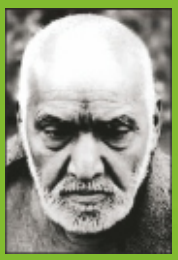

श्रीउपासनीबाबा
(साकुरी)

श्रीस्वामी समर्थ
(अक्कलकोट)

# श्रीमोटा की
# अंतिम झाँकी

( साक्षात्कार बाद देहत्याग तक की संक्षिप्त प्रसंगकथा )

पूज्य श्रीमोटा
हरिः ॐ आश्रम, सूरत - प्रकाशन

।। हरि:ॐ ।।

## श्रीमोटा की

# अंतिम झाँकी

**( साक्षात्कार बाद देहत्याग तक की संक्षिप्त प्रसंगकथा )**

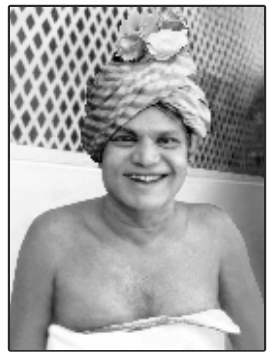

**पूज्य श्रीमोटा**

**: लेखक :**

इन्दुकुमार देसाई

**: अनुवादक :**

भास्कर भट्ट

रजनीभाई बर्मावाला 'हरि:ॐ'

हरि:ॐ आश्रम प्रकाशन, सूरत।

।। हरि:ॐ ।।

**प्रकाशक :**
पू. श्रीमोटा, हरि:ॐ आश्रम,
कुरुक्षेत्र महादेव मंदिर के पास,
जहाँगीरपुरा, सूरत – ३९५००५
दूरभाष : ०२६१-२७६५५६४। २७७१०४६
भ्रमणभाष : +९१ ९७२७७३३४००
e-mail: hariommota1@gmail.com
website: www.hariommota.org

© हरि:ॐ आश्रम, सूरत।

| **ओनलाइन** | **वर्ष** |
| --- | --- |
| प्रथम | दिसंबर २०२० |
| पृष्ठ : | ०७+३३=४० |

**प्राप्तिस्थान :**
हरि:ॐ आश्रम, सूरत – ३९५००५
हरि:ॐ आश्रम, पो. बो. नं. – ७४, नडियाद-३८७००१

**अक्षरांकन/मुद्रक :**
प्रोम प्रिन्टर्स,
अे-४, उद्योगनगर, नवसारी – ३९६ ४४५
दूरभाष : (०२६३७) २५५७७१
e-mail: promserve@gmail.com

।। हरि: ॐ ।।

# श्रीमोटा के वचनामृत

हम स्वयं अपने आपको ही अपना पूरा मना सकते नहीं तो दूसरा कोई हमारा माने ऐसा भ्रम रखना बहुत बेहूदा है।

कर्म में कर्म का महत्त्व नहीं है, किन्तु जीवन के भाव का सतत एक-सा जीवंत चिंतन रहा करे वह सविशेषरूप से महत्त्व का है।

जो संयमी जीवन जगत प्रति कठोर कर देता है वैसा संयम यथार्थ नहीं है। जो संयम को बारबार व्यक्त होनेपन हो, वह संयम ही नहीं है।

त्याग बिना जीवन का सच्चा आनंद नहीं है। त्याग करना आसान है, अगर सच्ची भावना प्रकट हो जाय तो।

जिसे सभी में से, उलटे-सीधे सभी प्रसंग में से, अच्छा ही देखने, अनुभव करने की कला जीवन में मिलती है, ऐसे जीव धन्य हैं।

'अच्छे' प्रति सद्भाव जागे उसमें उसकी कुछ कीमत नहीं है, किन्तु 'बुरे' प्रति भी सद्भाव जगाकर जीवंत करना है।

।। हरि: ॐ ।।

संसारव्यवहार में अनेक जीवों के साथ हमारा सम्बन्ध है। उन-उन सब जीवों के साथ उनका कुछ भी देखे बिना हमें उनके विकास के लिए सद्भाव प्रकट करने का है। हमें उनके लिए त्याग करने का हुलासवाले बनना ही पड़ेगा और हमें ही उनके लिए प्रेमहुलास से विशेष और विशेष सहन करने का जो स्वयं आये, उसे हुलास से तप समझकर हम अपने स्वयं के जीवनविकास के हेतु के लिए उसे स्वीकार करके वह सब भोगें तो जीवन ऊँचा आ सके।

**- मोटा**

।। हरि: ॐ ।।

मैं सर्वत्र विद्यमान हूँ - **मोटा**

# श्रीमोटा का अभयवचन

'जो लोग मुझे जानते हैं और मिले हैं और जो लोगों ने मुझे कभी भी देखा नहीं हैं या जाना नहीं है, ऐसे सभी को मेरा वचन है कि आप मुझे दिल से प्रेमपूर्वक याद करोगे तो मैं आपको संकट के समय में यह शरीर होने पर भी जो मैं मदद कर सकूँ, उससे भी अधिक अच्छी मदद परोक्ष रूप से अवश्य करूँगा।'

**- मोटा**

**जन्म :** ता. ०४/०९/१८९८ **देहत्याग :** ता. २३/०७/१९७६

।। हरि:ॐ ।।

# निवेदन

पूज्य श्रीमोटा को अद्वैत का साक्षात्कार काशी (बनारस) में हिन्दू विश्वविद्यालय में रामनवमी की शुभ रात्रि को मार्च २९, १९३९ को हुआ। पश्चात् देहत्याग तक का संक्षिप्त आलेखन सन् १९७८ में श्री इन्दुकुमार देसाई ने किया था।

पूज्य श्रीमोटा के अंतिम दिनों की सूक्ष्म माहितीपूर्ण यह पुस्तिका रसयुक्त और प्रेरक है। अत: साधकजन इसका प्रेमपूर्वक स्वागत करके स्वयं भी लाभ लें और अन्य जनों को भी उपहार रूप में वितरण करें ऐसी नम्र विनती है।

दि. २५/१०/२०२०
विजयादशमी, संवत : २०७६

**ट्रस्टीमंडल**
हरि:ॐ आश्रम, सूरत।

।। हरि:ॐ ।।

# अनुक्रमणिका


१. हरि:ॐ आश्रमों ..... ०१
२. मौनमंदिरों ..... ०५
३. समाजोत्थान कार्यों का प्रारंभ ..... ०८
४. दान प्रवृत्ति का हेतु ..... १०
५. समयधर्म के अनुरूप संशोधन को उत्तेजन ..... ११
६. साहस-शौर्य वृद्धि को प्रोत्साहन ..... १२
७. दान की अपनी कला ..... १३
८. साहित्यसर्जन ..... १४
९. शास्त्रों के समान पद्य-साहित्य ..... १५
१०. भजन ..... १६
११. घूमना बंद किया ..... १७
१२. देहत्याग का निर्णय ..... १८
१३. निर्णय ठेलाया ..... १९
१४. स्वास्थ्य बिगड़ा ..... २१
१५. देहत्याग के पूर्व ..... २२
१६. देहत्याग ..... २४
१७. वसीयतनामा ..... २६
१८. अंतिम विधि ..... २७
१९. अंतिम आदेश का पालन ..... २८
२०. आरती ..... २९
२१. साधना-मर्म ..... ३०
२२. पूज्य श्रीमोटा के जीवन का परिचय ..... ३२

।। हरि: ॐ ।।

# १. हरि:ॐ आश्रमों

पूज्य श्रीमोटा ने १९२२ से १९३९ तक हरिजन सेवक संघ का कार्य करते-करते उन्होंने अपना जीवनध्येय प्राप्त किया था। वे अपनी माताजी की रज़ा लेकर संस्था में से निवृत्त हुए। साक्षात्कार की सिद्धि के बाद अनेक व्यक्ति उनके सम्बन्ध में आने लगे। उन सब ने सहज रीत से पूज्य श्रीमोटा के पास से आध्यात्मिक मार्गदर्शन लेना शुरू किया। कितने नये भक्त भी मिले इन आत्मीय स्वजनों में से कइयों के वहाँ पूज्यश्री थोड़े दिनों तक उनके आमंत्रण से रहते भी सही।

ऐसे स्वजनों में से एक श्री नंदुभाई भी सही। हालांकि वे गांधी आश्रम, साबरमती में गांधी विचारधारा से रंगाकर सेवाभाव से रहते थे। फिर भी वे दक्षिण भारत में त्रिचि और कुंभकोणम् में हीरे और सोने-चांदी की व्यापारी पीढ़ी के साझेदार भी थे। उस निमित्त से श्रीमोटा दक्षिण भारत में जाते रहते थे। कुंभकोणम् और त्रिचि के उस परिवार के मकान में श्रीमोटा की प्रेरणा से मौनमंदिर की योजना का अमल किया गया था। गांधी आश्रम, साबरमती में मीराकुटिर के अंदर भी मौनमंदिर शुरू किया गया था। श्रीमोटा छ महीने दक्षिण भारत में और छ महीने अन्यत्र मुंबई, कराची, अहमदाबाद, सायला इत्यादि स्थानों पर भक्तों के वहाँ एक के बाद एक रहते थे। इससे उनके एक भक्त श्री हेमंतकुमार नीलकंठ को ऐसा विचार आया कि ऐसे विविध स्थानों पर घूमते रहने के बदले यदि एकाध स्थान पर आश्रम की स्थापना हो तो जीवनविकास का हेतु अच्छी तरह साधा जा सकता है। उन्होंने श्रीमोटा के समक्ष यह प्रस्ताव रखा। श्रीमोटा ने जवाब दिया, 'मकान के लिए तीसेक हजार रुपये मिले और एक लाख रुपये नकद मिले तो आश्रम शुरू करूँ।' यह हुआ सन् १९४७ में। श्री हेमंतभाई बारबार इस बात पर श्री नंदुभाई का ध्यान खींचते। आखिर दोनों ने मिलकर परिपत्र निकाला और श्रीमोटा के साथ जुड़े हुए व्यक्ति और अपने परिचितों में वह परिपत्र भेजा। इसके परिणाम से रुपये २५,०००/- नकद मिले और बाकी के लिए वचन मिले। वह सब मिलाकर कुल रुपये ८८,०००/- जितनी राशि हुई। एक भाई ने मकान देने का प्रस्ताव

भी पेश किया। बाद में श्रीमोटा ने विशिष्ट कारण से वह राशि सब को वापस करवा दी। श्री नंदुभाई के मामा और मे. एन. गोपालदास की पीढ़ी के बुजुर्ग साझेदार श्री गोपालदासभाई ने कुंभकोणम् और त्रिचि में कई स्थानों को देखे। एक मकान उनको पसंद आया। उन्होंने श्रीमोटा को बताया भी सही, किन्तु आपश्रीको पसंद नहीं आया। श्री नंदुभाई ने भी नर्मदामैया के तट पर कई स्थानों देखे। बदरीकाश्रम, (बरकाल विस्तार, तह. शिनोर, जि. वडोदरा, गुजरात) में तो श्रीमोटा को जमीन पसंद आयी थी और उनकी अनुमति भी मिली थी। ऐसी एक जमीन तय करके बयाने के पैसे भी दिये थे, किन्तु बाद में देनेवाले का विचार बदल गया। इससे मना कर दिया। आखिर सन् १९५० में वर्तमान की कुंभकोणम् आश्रमवाली जमीन पसंद आई। किन्तु श्रीमोटा की इच्छा अपने पैसे से ही लेने की थी। उनके पास उस समय सिर्फ रुपये ३,०००/- (तीन हजार) थे। श्री गोपालदासभाई ने कहा,'तीन हजार रुपये में किस प्रकार होगा?' ऐसा कहकर उन्होंने पैसे दिये और श्रीमोटा को मना लिया कि जब आपकी इच्छा हो, तब वापस कर देना। पाँच हजार में वह जमीन खरीदी गई और बीस हजार रुपये में मकान बनाया। श्री गोपालदासभाई ने स्वयं की देखभाल के नीचे आश्रम के कमरे बँधवाये। यों सन् १९५१ में कुंभकोणम् में मौनमंदिर का आरंभ हुआ।

कुंभकोणम् आश्रम की स्थापना बाद में गुजरात में भी एकाध आश्रम हो तो अच्छा ऐसा विचार श्री हेमंतभाई नीलकंठ को आया। सन् १९५५ में शेढी नदी के किनारे अभी का नडियाद आश्रम शुरू हुआ। यद्यपि पहले से ही श्रीमोटा के ध्यान में यह जगह थी सही। श्रीबालयोगी महाराज ने नडियाद डभाण के रास्ते 'हाजिमंझिल' में जब श्रीमोटा को दीक्षा दी, उसके बाद विविध स्थानों पर साधना के लिए उन्हें घूमाये थे, उसमें यह भी एक जगह थी। आज के उस विशाल वटवृक्ष पर पूरी रात बिठाकर नामस्मरण उन्होंने करवाया था।

असल में वह जगह कबीरपंथी साधुओं की थी। किन्तु उसके बाद खाली पड़ी हुई थी। उस जगह की गहरी जाँच करने पर पता लगा था कि वह सरकार की मालिकी की थी। श्रीमोटा ने सरकार के पास से मामूली कीमत में

खरीद ली। प्रारंभ में दो-तीन महीने श्री हेमंतभाई नीलकंठ अकेले वहाँ रहे। कुछ भी कोई साधन नहीं मिलता था। अकेले दूध पर डेढ़ महीना निकाला था। आखिर आज के स्वरूप में वह आश्रम विकसित हुआ।

आरंभ में पतरे का एकमात्र छोटा कमरा था। आश्रम पर आनेवाले भक्तों के सहकार और श्रमयज्ञ से एक के बाद एक तीन-चार कमरे हुए थे। फिर तो जैसे-जैसे श्रीमोटा का कार्यक्षेत्र विस्तृत होता गया वैसे-वैसे दूसरे गुंबदवाले मौनकमरे भी भक्तों ने स्वयं खर्च देकर बँधवाये। श्रीमोटा तो स्वयं ज्यादा खर्च करने में मानते नहीं थे। किन्तु कोई सूचन करे तो कहते, बिना चेक का सूचन निरर्थक। सलाह-सूचन तो बहुत से लोग करे, किन्तु वह करनेवाले को अपनी जवाबदारी को भी साथ-साथ स्वीकार करना चाहिए। ऐसी श्रीमोटा की विचारशैली के अनुरूप सब विकसित होता गया।

## सूरत आश्रम की स्थापना

सन् १९५६ में सूरत आश्रम की स्थापना हुई। सूरत से वरियाव जाने के रास्ते पर जहाँगीरपुरा में तापी नदी के किनारे कुरुक्षेत्र श्मशानभूमि के पास कुरुराज महादेव का मंदिर है, उसके पास की जमीन स्व. श्री भीखुभाई पटेल ने मोलकर ली। वे चौरासी तालुका के एक सक्रिय कोंग्रेसी कार्यकर्ता, स्वातंत्र्यसंग्राम सेनानी, राष्ट्रीय आन्दोलनों में अनेक बार जेलयात्रा करनेवाले, धरासणा के (गांधीबापु प्रेरित) नमक सत्याग्रह के अडिग सत्याग्रही थे। वे पू. श्रीमोटा के प्रति आकर्षित हुए थे। उस समय कुरुक्षेत्र की धर्मशाला में श्री भीखुभाई, श्री झीनाभाई, श्री चंपकभाई, श्री चूनीभाई आदि परदे डालकर मौनकमरे की व्यवस्था खड़ी करके वहाँ सन् १९५४ से मौन में बैठते थे।

जहाँगीरपुरा कडुए पाटीदार पटेल की बस्तीवाला गाँव था। सन् १९५५ के मई महीने में श्रीमोटा आये थे, तब आश्रम बनाने की बात निकली। उस समय इस जमीन पर नजर पड़ी थी। वह लेने के लिए उन्होंने सूचना की थी। उस जमीन का उपयोग पशुओं की चारागाह के तोर पर ही होता था। श्री भीखुभाई ने उसके मालिक मारवाड़ी बनिये श्री अमीचंद तेजाजी को जमीन खरीदने की दरख्वास्त की। किन्तु श्री भीखुभाई को साफ मना कर दिया। उस

दरमियान श्रीमोटा वह जमीन देखने गये थे और रुपये ३००-४०० में मिले तो लेना ऐसी इच्छा व्यक्त की थी। आखिर श्री भीखुभाई ने उस समय के सुरत के अग्रणी कोंग्रेसी कार्यकर्ता श्री वैकुंठभाई शास्त्री की मदद लेकर रुपये ३७१/- में सौदा पक्का कर दिया।

इस खरीदी के बाद जमीन को संभालने और विकसित करने के लिए श्रीमोटा ने श्री झीणाभाई को कुरुक्षेत्र की धर्मशाला में रहने को कहा था। धर्मशाला खुली थी और सामने ही मुरदे जलाये जाते थे। श्री झीणाभाई ने वहाँ रहकर इस जमीन के आसपास महेंदी की बाड़ कर दी और धीरे-धीरे जमीन को बगीचे के लायक बना दी। कुआँ भी बनाया। आज वहाँ आयोजन अनुसार सुंदर मकान बने हुए हैं। उस जमीन को सुंदर फल-फूल के पेड़-पौधे लगाने योग्य जमीन में बदल दिया गया है। यह सब करने में श्री भीखुभाई और श्री झीणाभाई ने बहुत सख्त परिश्रम किया है।

नडियाद आश्रम सूरत आश्रम की तुलना में देहाती लगता है। जूना बिलोदरा (नडियाद) में शिवजी की जटा जैसा विराट वटवृक्ष है सही, किन्तु अन्य प्रकार से वह बिलकुल सामान्य है। श्रीमोटा अपनी लाक्षणिकता से नडियाद आश्रम को अपना शिवधाम और सुरत आश्रम को अपना विष्णुधाम की तरह परिचय करवाते थे।

।। हरि: ॐ ।।

## २. मौनमंदिरों

आज नडियाद आश्रम में नौ मौनकमरे हैं और सूरत आश्रम में भी नौ मौनकमरे हैं। श्रीमोटा को अपने साधनाकाल दरमियान एकांतवास के सम्बन्ध में बहुत कठिनाई हुई थी। कहीं दूर निर्जन पहाड़ी प्रदेश में चले जाते। तब शुरूआत में तीन-चार दिन निराहारी रहना पड़ता था। फिर प्रभुकृपा से कोई न कोई आ जाता और भोजन-प्रसाद दे जाता। किन्तु ऐसा होने में अन्य व्यक्ति के साथ संपर्क में आना पड़ता था। इतने प्रमाण में आत्यंतिक एकांत की आवश्यकता को नुकसान पहुँचता था।

उनके ऐसे अनुभवों में से उन्हें ऐसा सतत विचार आता कि साधक की अपनी सभी दैनिक आवश्यकताएँ पूरी हो सके, फिर भी उसे बाहर की दुनिया की किसी प्रकार की खलल पैदा न हो, ऐसी कोई व्यवस्था की जा सकती है क्या ? इस विचार में से वर्तमान के मौनमंदिर का विचार पैदा हुआ है और पूरे भारत में उसकी विशिष्टता के लिए बेजोड़ है। यह है आधुनिक सुविधाओं के साथ की मानो पुराने जमाने की गुफाएँ। अंदर प्रवेश करनेवाला व्यक्ति नामस्मरण, ध्यान, भजन, कीर्तन या अन्य साधन द्वारा अपनी साधना करता है और चित्तशुद्धि प्राप्त करने का पुरुषार्थ प्रारंभ करता है।

इस अवधि दरमियान चित्त पर भगवान के जो शुद्ध , सात्त्विक संस्कार पड़ते हैं, वे वज्रलेप के समान चिपक जाते हैं। इससे उस व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास सरल बनता हैं। उसकी अंतर्मुखता बढ़ती है और बहिर्मुखता कम होती है। जप, ध्यान, भजन-कीर्तन, मननचिंतन, आत्मनिवेदन आदि साधनों का गहरा अभ्यास होने से लम्बे समय के बाद मन के संकल्प-विकल्प पर काबू आने लगता है। विचारों की साँकल बनने से अटकती है। **इसके लिए मन, शरीर और इन्द्रियों की पड़ी हुई आदतों में से बाहर निकलने की आवश्यकता है। इससे प्रकाश के बिना थोड़ी हवावाले अंधेरे कमरे का आयोजन करने में आया है। इन कमरों में बाहर के वातावरण के आंदोलन प्रवेश नहीं कर सकते हैं। सितंबर २००६ से परिस्थिति बदल दी गई है। बड़े-बड़े रोशनदान बनाये गये हैं। जिससे**

**प्रकाश और ध्वनि आंदोलन प्रवेश कर सकते हैं।**

बाहर जिस प्रकार रहते हो, उससे बिलकुल विरुद्ध दिशा में अंदर रहना होता है। **साधना करना यानी पड़ी हुई आदतों को पलटाना—प्रकृति को पलटाना। बाहर के दृश्यों, आवाज आदि अंदर की व्यक्ति को नहीं मिलने से उसका मन स्वयं अपने अंतर के प्रति मुड़ता है। इससे मौनकमरे स्वचिंतन में सहायभूत होते हैं। परिणामस्वरूप वृत्ति और विचारों का मौन विकसित होता है।**

मौनमंदिर में रहने के लिए किसी भी धर्म, संप्रदाय या गुरुपरंपरा का भेद रखने में नहीं आता है। ख्रिस्ती, मुस्लिम और पारसी भी इसका लाभ लेते हैं। पूज्य श्रीमोटा को ही गुरु मानना या 'हरि:ॐ' का ही रटन करना वह आवश्यक नहीं है। यदि साधक चाहे तो ही उसे आध्यात्मिक सलाह या मार्गदर्शन देने में आता है। व्यक्ति अपनी मरजी से अपने खर्च पर रहता है। ७-१४-२१ या उससे भी ज्यादा दिनों के लिए रह सकते हैं। किन्तु वह अवधि पहले से निश्चित कर लेनी चाहिए। कई तो वर्ष में एक-दो बार नियमित मौन लेने आते हैं। मौनकमरे में आराम से सो सके ऐसा झूला-पलंग, पढ़ने-लिखने-भोजन करने के लिए कुर्सी-टेबल, घड़ी, मसहरी, बिजली, उपासना के लिए पाट, पीने के पानी के लिए मटका, प्याला, अलग शौचालय और स्नानगृह और सामान रखने के लिए छोटा स्टोररूम, चौबीस घंटे ठंडे-गरम पानी की व्यवस्था है। मौनार्थी अपनी पसंद के धार्मिक, आध्यात्मिक पुस्तक ले जा सकते हैं। मौनकमरे में पूज्य श्रीमोटा के आध्यात्मिक साहित्य के पुस्तक भी हैं। किसी समय आवश्यकता हो तो आपातकालीन बिजली के बेल की भी व्यवस्था है।

प्रात: ४.४५ बजे चाय, १० बजे भोजन, दुपहर को १.४५ बजे चाय और शाम को ५.०० बजे भोजन देने में आता है। भोजन बिलकुल सादा होता है। सुबह दाल, भात, शाक और भाखरी (मोटी कुरकुरी गेहूँ की रोटी)। शाम को भाखरी, शाक या दलहन। दूध-दही खास बिनती करने से दिया जाता है। मिष्टान्न या तेल में तली हुई चीज आश्रम में बनाने का निषेध है। कभी किसी भक्त के यहाँ से प्रसादरूप में आया हो तो देते हैं। मौनकमरे की दीवार में एक

ऐसी खिड़की होती है, जो अंदर भी खुले और बाहर भी खुले। बाहर से खिड़की में चीज-वस्तु रखने के बाद 'हरि:ॐ'' प्रभु! भोजन-प्रसाद रखा है, प्रेम से आरोगिये' आदि पुकार करने में आता है। जिससे मौनार्थी अपनी तरफ की खिड़की खोलकर उसे स्वीकार करता है। कोई किसी का मुख नहीं देख सकते हैं।

मौन पूरा करनेवाले और मौनकमरे में प्रवेश करनेवाले एवम् शहर के अन्य स्वजन रविवार को सुबह एकत्रित होकर **'हरि:ॐ' की धुन, पू. श्रीमोटा का प्रिय भजन ''हरिको भजते..... '' और फिर 'हरि: ॐ' की धुन। इस प्रकार प्रार्थना करते हैं। इसके अलावा दूसरा कोई भी सामूहिक कार्यक्रम आश्रम में नहीं होता है। मौनमंदिर में रहे हुए मौनार्थी की सेवा आश्रम की मूल प्रवृत्ति है।**

।। हरि: ॐ ।।

## ३. समाजोत्थान कार्यों का प्रारंभ

'जीवनदर्शन' पुस्तक में श्रीमोटा ने अपने कई इन्द्रियातीत अनुभवों का वर्णन किया है। ऐसा एक अनुभव नडियाद आश्रम के वटवृक्ष के नीचे श्रीमोटा को सन् १९५५ में हुआ था। श्रीमोटा उस अनुभव का इस प्रकार वर्णन करते थे:-

एक दिन वटवृक्ष के नीचे झूले पर वे बैठे थे। तब श्रीसद्गुरु उन्हें प्रत्यक्ष हुए और कहा, 'बैठा क्या रहा है? कुछ कर।' उन्होंने पूछा, 'क्या करूँ?' श्रीसद्गुरु ने कहा, 'समाज के पास से लेकर समाज को वापस अर्पण कर।' श्रीमोटा ने कहा,'मैं किस प्रकार माँगु? मुझे कौन देगा? मेरी स्थिति तो ऐसी कंगाल है कि इस नडियाद में मुझे कोई पाँच रुपये भी उधार नहीं देगा और यदि दे तो उसका ऋण में किस प्रकार दूँगा?' श्रीसद्गुरु ने कहा,'तुम माँगना शुरू करो। मैं तुम्हारे पीछे हूँ। लोग तुम्हें देंगे। तुम्हें देने का ऋण चुकाने की जवाबदारी मेरी। **लेकिन तुम मौलिक काम करना। लीक के अनुसार नहीं। ' यह है श्रीमोटा के दान की प्रवृत्ति के पीछे रहा हुआ रहस्यमय प्रसंग और आध्यात्मिक आधार।** कई श्रीमोटा को सिर्फ शुद्ध सामाजिक सेवा करनेवाले संत ही मानते हैं। **किन्तु उनकी इस सामाजिक सेवा का मूल आध्यात्मिक है।** जो-जो लोककल्याण की प्रवृत्ति उन्होंने शुरू की, वह मौलिक तो है ही और उसकी तंत्रव्यवस्था भी अनोखे प्रकार की है। जिस प्रवृत्ति के लिए दान चाहते हो, उसका लक्ष्यांक और संकल्प वे पहले जाहिर करते और फिर उस सम्बन्ध में दान एकत्रित करते। घर-घर पर उनकी पधरावनी होती थी। उसके लिए उनकी लाक्षणिक रीत से कहते, कोई आमंत्रण दे और दक्षिणा दे तो उसके वहाँ एक दिन के लिए रोट खाने जाना है और न्योता आये तब स्पष्ट बताते, 'भाई, आप मुझे लेने आये हो, चाहकर निमंत्रण देने नहीं आया हूँ। तो आने के लिए मेरी दक्षिणा दो।'

प्रारंभ के वर्षों में दक्षिणा की यह रकम छोटी थी। किन्तु उनकी प्रवृत्ति दिनप्रतिदिन विकसित होने पर बड़े समाज में फैलने लगी। रुपये का मूल्यांकन भी दिनप्रतिदिन कम होते गया। इससे दक्षिणा की रकम भी बढ़ी। अंत में रुपये

१००१/- की दक्षिणा न होती तो कहीं नहीं जाते। लोग केवल उतना ही देकर बैठे नहीं रहते। बहुत से लोग अपनी शक्ति हो उससे चार-पाँच गुनी और फिर कभी तो दसगुनी रकम भी अर्पण करते। उनकी जहाँ पधरावनी होनेवाली हो, उस कर्यक्रम का बड़े भक्तसमाज को समाचार मिल जाता था। इससे पूरा दिन भक्तों का एवं यजमान के सम्बन्धियों का प्रवाह एक-सा बहता। वे चरणवंदना करते समय पास में रखी हुई थाली में यथाशक्ति रकम रखते। यों थाली में भी ठीक-ठीक रकम जमा होती।

**जिन-जिन स्वजनों को पूज्यश्री की अंतरचेतना का स्पर्श होता था, उनको भी पूज्यश्री अपने लिए फंड एकत्रित करने को कहते थे। उसमें साधक स्वयं निर्ग्रंथ बने और श्रीसद्गुरु के प्रति वह कर्म द्वारा सतत तीव्र स्मृति का अनुभव करे यह मुख्य हेतु था।**

इस हकीकत से वे लोग अनजान हैं। अपने श्रीसद्गुरु के हुक्म का पालन वही उनकी दानप्रवृत्तियुक्त सामाजिक सेवा का रहस्य। हुक्मपालन वही उनके लिए सर्वस्व था। उस हुक्म का अक्षरशः पालन उन्होंने कर दिखाया।

इसके अतिरिक्त पूज्य श्रीमोटा के स्वजनों गुजरात के विविध स्थलों पर उनके जन्मदिन, दीक्षादिन और साक्षात्कारदिन —ऐसे तीन उत्सव हर वर्ष आयोजित करते थे। **तब भी उनके चरणों में अच्छी रकम अर्पण की जाती थी। इन प्रसंगों पर जो रकम एकत्रित होती, वह जाहिर की हुई संकल्पवाली योजना में जमा होती। आश्रम में आता इस दानप्रवाह में से आश्रम का निभावखर्च नहीं होता था और अब भी करने में नहीं आता।**

।। हरि: ॐ ।।

## ४. दान प्रवृत्ति का हेतु

पूज्य श्रीमोटा ने शुरू की हुई दानप्रवृत्तियों का पृथक्करण करते उसकी नींव में या तो भावविकास या तो गुणविकास वही महत्त्व का हेतु दिखेगा। उनकी दृढ़ मान्यता थी की जिस समाज में गुण और भाव का विकास नहीं होता, वह समाज कितनी भी ऊँची बातें करे, किन्तु आध्यात्मिक रूप से तो पंगु ही रहेगा। उन्होंने किए हुए दान और उनके क्षेत्र इतने तो विस्तृत हैं कि उसके लिए एक अलग पुस्तिका की आवश्यकता है। किन्तु अभी महत्त्व का संक्षेप निम्न अनुसार दिया जाता है, जिससे उसका थोड़ा ख्याल आएगा।

।। हरि: ॐ ।।

## ५. समयधर्म के अनुरूप संशोधन को उत्तेजन

अलग-अलग क्षेत्रों में उत्कृष्ट संशोधन के लिए एवोर्डझ देने के लिए दान दिये गये, उसमें मेडिकल काउन्सिल ओफ इन्डिया को रु. ३ लाख और युनिवर्सिटी ग्रान्टस कमिशन को रु. ६ लाख दिये गये हैं। गरीब वर्ग को आर्थिक दृष्टि से पुसा सके ऐसे सस्ते घर के आयोजन के लिए हाउसिंग एन्ड अर्बन डेवलपमेन्ट कोर्पोरेशन (हुडको), दिल्ही को रु. ३ लाख की रकम दी गई है। ऐसोसियेशन ओफ सर्जन्स (ओल इन्डिया) मद्रास को दो लाख रुपये दिये गये हैं। गुजरात की लगभग सभी युनिवर्सिटी को विविध विषयों के लिए विषय अनुसार रु. ५०,०००/- गुजरात राज्यकक्षा में संशोधन के लिए दिये हैं। इन विषयो में वनस्पति संरक्षण और संवर्धन, मानवसर्जित रेशे-रसायणशास्त्र, समुद्रशास्त्र, पुरातत्त्वविद्या, समाजशास्त्र, फिजिक्स, बायोकेमिस्ट्री, सोईलकेमिस्ट्री, जीयोकेमेस्ट्री, उष्णकटिबंध के रोग, इन्जीनियरिंग और टेकनिकल विषय, रंग और रंग की बनावट, खारे पानी में से पीने का मीठा पानी बनाना, आयुर्वेद, बगीचे में होनेवाली कृषि, कृषि, विज्ञान इत्यादि का समावेश होता है। अनाज, दलहन और पशु इत्यादि के संवर्धन के लिए इन्डियन काउन्सिल ओफ एग्रीकल्चरल रिसर्च (दिल्ही) को रु. ३ लाख दिये गये हैं। जिला स्तर पर खेड़ा जिला पंचायत को शालि, बाजरा इत्यादि में श्रेष्ठ पैदावार लेने के लिए २५-२५ हजार रुपये दिये गये हैं। गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी एवं विज्ञान की प्रतिभाशोध के लिए विविध युनिवर्सिटियों को प्रत्येक विषय के लिए लगभग ५०,०००/- रुपये दिये हैं।

।। हरि: ॐ ।।

## ६. साहस-शौर्य वृद्धि को प्रोत्साहन

नदी-समुद्र में तैरने की स्पर्धा, स्विमींग पुलों में स्पर्धा, स्विमींग पुल बाँधना, नदी-समुद्र में नावों की स्पर्धा के लिए लगभग ९ लाख रुपये विविध संस्थाओं को दिये हैं। संस्कारों का पोषण करनेवाले गुणभाव विकासक साहित्य के प्रकाशनों के लिए विविध संस्थाओं को रु. ३१ लाख से ज्यादा की रकम दी है। जिसमें एन्साइक्लोपीडिया - ब्रिटानिका जैसे ज्ञानकोश के लिए रु. १० लाख, ज्ञानगंगोत्री के लिए रु. ३ लाख पचास हजार, किशोरभारती, बालभारती, शिशुभारती के लिए रुपये ४ लाख २५ हजार, सर्वधर्म तत्त्वज्ञानदर्शन के लिए २ लाख, विज्ञान टेक्नोलोजी संदर्भग्रंथ के लिए रु. ५ लाख, अंग्रेजी - गुजराती शब्दकोश के लिए डेढ़ लाख, व्यायामकोश के लिए रु. १ लाख, विज्ञानश्रेणी, जीवनचरित्र ग्रंथश्रेणी, रामायण-महाभारत-भागवत इत्यादि की त्रिरंगी सचित्र कथाएँ, गुजराती व्याकरणग्रंथ, व्युत्पत्तिशास्त्र, वेदग्रंथश्रेणी, बालकों की कहानी की ग्रंथश्रेणी, साहस और शौर्य कथाएँ इत्यादि के लिए कुल रु. ३ लाख ४४ हजार जितनी रकम एवम् मेघाणी, नर्मद, श्रीअरविंद, प्रेमराय बापु, मणिभाई नभुभाई, बालाशंकर, गोवर्धनराम व्याख्यानमाला के लिए अंदाजन रु. १ लाख और स्त्रीसाक्षरों की मौलिक कृति के लिए रु. २५ हजार और बहनों को शौर्य-साहस की तालीम के लिए रु. १ लाख महाजन शक्तिदल ट्रस्ट को दिये हैं।

विद्यार्थियों के लिए प्रवास, पैदल प्रवास, साइकिल स्पर्धा, दौड़-कूद, पर्वतारोहण, व्यायाम, बोटिंग, मर्दानगी के खेल इत्यादि के लिए रु. ७ लाख से ज्यादा रकमों का दान हुआ है। वेधशाला के लिए रु. १ लाख और लोकभारती और गंगाजला विद्यापीठ इत्यादि ग्राम्यविद्यापीठों के लिए रु. २ लाख दिये गये हैं। यों दान की रकम और क्षेत्र बहुत विस्तारित है। यहाँ सब का समावेश करना संभव नहीं है।

।। हरि: ॐ ।।

## ७. दान की अपनी कला

इस दान की खूबी यह है कि ज्यादातर रकम ज्यों की त्यों रहती है और उसके ब्याज में से सभी पारितोषिक, एवोर्डझ, स्कोलरशीप दी जाती हैं। प्रशासनिक खर्च उस संस्था को उठाना पड़ता है। प्रति वर्ष उसका हिसाब हरि: ॐ आश्रम को भेजना पड़ता है। रकम तीन साल तक बिना उपयोग की रहे तो ब्याज सहित रकम वापस करनी पड़ती है।

पूज्य श्रीमोटा ने इन कार्यों के लिए १९६२ से १९७५ तक अविरत श्रम लिया है। यों नादुरस्त स्वास्थ्य के साथ सतत प्रवृत्तिमय रहकर कर्मयोग का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया है। यह सब सुबह से शाम अलग-अलग घर पर घूमना, मीलों की मुसाफरी करना और वह भी शरीर में रही हुई अनेक बीमारियों के साथ करना, वह असामान्य था। उन रोगों में से एकाध रोग भी यदि सामान्य जन को तो वह बिस्तर पर ही पड़ा रहेगा। कमर के दो-तीन मनके घीस चुके थे। आखिर-आखिर में गरदन पर के मनके भी घीस चुके होने से बहुत दर्द देते थे। अंतिम कई वर्षों तक तो वे चल भी नहीं सके थे। उनको व्हीलचेर में बिठाकर एक जगह से दूसरी जगह घूमना पड़ता था। मनके में से सतत पीन चुभे ऐसा असह्य दर्द हुआ करता था। सर्पदंश की गरमी तो शरीर में थी ही, आँख और सिर का एक रोग जिसके कारण सिर में सतत शूल काँटा-सा दर्द चुभता हो। एसिडिटी, शरीर में पानी का भर जाना (Waterlogging), गृधसी (Sciatica), गले का दर्द, चमड़ी की ऐलर्जी, खुजली इत्यादि तो थे ही। भारी हमला करनेवाला दमा तो उनका वर्षों से साथी बन बैठा था। उसमें राहत का अनुभव करने के लिए आखिरी वर्षों में ओक्सिजन लेना पड़ता था, तदुपरांत प्रोस्टेटग्लेंड की तकलीफ तो थी ही। ऐसे पीड़ादायी नादुरस्त स्वास्थ्य में भी वे घूमते ही रहते थे।

।। हरि: ॐ ।।

## ८. साहित्यसर्जन

पूज्य श्रीमोटा वैसे तो कविजीव थे। साधनाकाल में अपने सभी भावों को व्यक्त करनेवाली प्रार्थनाओं की रचना उन्होंने विविध छंदो में की है। वे सभी पुस्तक प्रारंभ में तो 'मोटा' के नाम के बिना ही प्रकाशित होते थे। किन्तु बाद में जब 'मोटा' समाज में प्रसिद्ध हुए, तब उनके सब मिलाकर लगभग ७० जितने पुस्तक प्रसिद्ध हुए हैं।

पूज्य श्रीमोटा ने लिखने के लिए कोई दिन लिखा नहीं है। सोच सोचकर, जुगाली कर करके कुछ लिखने की आदत उनमें पहले से ही न थी। उनके पास आध्यात्मिक मार्गदर्शन चाहनेवाले स्वजनों को वे पत्र लिखते, उन सब का संग्रह हुआ है और पुस्तकरूप में प्रकाशित हुए हैं। वह उनका गद्य-पद्य साहित्य है। इसके अतिरिक्त उत्तम प्रकार की पद्यरचनाएँ जो गझल के राग में हैं, वे भी पुस्तकरूप में प्रकाशित हुई हैं। उसकी गिनती जगत के उत्तम आध्यात्मिक साहित्य में होती है। वे सभी रचनाएँ गुजराती भाषा में हैं।

।। हरि: ॐ ।।

# ९. शास्त्रों के समान पद्य-साहित्य

देहत्याग के पहले पाँच-छ वर्ष में दूसरे दो प्रकार का साहित्य भी पूज्य श्रीमोटा ने सर्जन किया है। आध्यात्मिक विचारधारा में जो विविध विभावनाएँ (Concepts) होती हैं, उसके कोई अखंडसूत्र शास्त्रों की रचना हुई हो, उसकी जानकारी नहीं है। अलबत्ता, उस विषय के अलग-अलग संदर्भ इधर-उधर विविध संस्कृत साहित्य में देखने मिलते हैं सही, किन्तु उसमें से एक ही विषय लेकर सभी पहलूओं का निरूपण किया हो ऐसे उदाहरण भारत की विविध भाषा में भी नहीं मिले हैं। 'श्रद्धा,' 'भाव,' 'जिज्ञासा,' 'निमित्त,' 'रागद्वेष,' 'मोह,' 'कृपा,' 'कर्मउपासना,' 'श्रीसद्गुरु,' 'स्वार्थ,' 'गुणविमर्श' आदि पुस्तक इस प्रकार के हैं। वे सब उन विषयों के शास्त्र समान हैं। यद्यपि वे सब पद्य में और अनुष्टुप छंद में हैं। फिर वह सब किसी न किसी निमित्त से लिखा हुआ है। कोई भी स्वजन कुछ सूचन करे, तब वह उस लेख को छपवाने की और बिक्री करने की जवाबदारी स्वीकार करे तो पूज्य श्रीमोटा कलम उठाते। उनको पद्यपंक्तियाँ प्रपात की तरह उतर आती। इससे कुछ एक तो अल्पकाल में ही रचे गये थे।

।। हरि: ॐ ।।

## १०. भजन

उनके साहित्य का अन्य एक प्रकार ऐसा भी है कि जिसमें केवल प्रार्थनाओं का ही संग्रह है। ऐसे अनेक पुस्तक हैं। ८ से १० पंक्ति की वह प्रार्थना अधिकतर गझल में लिखते। अलग-अलग स्वजनों ने स्वयं पूज्यश्री समक्ष व्यक्त की हुई इच्छानुसार प्रत्येक को हररोज एक-एक प्रार्थना पोष्ट में भेजते थे। वे स्वजन उसे एकत्रित करके २००-२५०-३०० जितनी हो, तब पुस्तकरूप से छपवाते और बिक्री करते। उसमें पूज्य श्रीमोटा की 'साधना की आत्मकथा' जैसा कुछ व्यक्त होता। आखिरी में उस पद्यसाहित्य में एक उपप्रकार पैदा हुआ था। चार पंक्ति के मुक्तक रचाने लगे थे। उस तरह से उसमें एक अखंड भाव व्यक्त हो जाता और एक पन्ने पर एक ही मुक्तक आये उस तरह वे छपे हैं। भयंकर शारीरिक वेदना में वे भजन ही पूज्यश्री का सहारा बने रहे थे। भगवान के गुणकथन में शरीर की वेदना सह्य बनती।

यह सब उनकी निरंतर प्रवास करने की प्रवृत्ति और पधरावनी दरमियान रचा हुआ था। आश्रम पर आती बहुत सी डाक के जवाब भी उनके अंतेवासी श्री नंदुभाई प्रवास दरमियान देते। उनका घूमता कार्यालय पू. श्रीमोटा के साथ ही रहता। जहाँ-जहाँ जाते वहाँ कार्यालय चालू हो जाता। दानगंगा की शुरूआत हुई, उसके पहले की उनके प्रारंभ के पुस्तकों की रुपये डेढ़ लाख जितनी आय और देहोत्सर्ग बाद बिक्री हुए अन्य डेढ़ लाख रुपये के पुस्तक की आय मिलकर कुल तीन लाख रुपये उस तरह समाजसेवा में खर्च हुए। श्रीमोटा के साहित्य से होती आय, उनके समाजोत्थान के कार्य में ही उपयोग होती और आज भी उपयोग में आती है।

।। हरि: ॐ ।।

## ११. घूमना बंद किया

ऐसी प्रवृत्ति पूरे वेग से चल रही थी तभी १९७५ के रामनवमी के अहमदाबाद के टाउनहोल के उत्सव में उन्होंने जाहिर किया कि 'अब मुझे कोई उत्सव आयोजित नहीं करने देना है। अब मैं अहमदाबाद आनेवाला नहीं हूँ। अब कोई मुझे मिलने-करने आश्रम पर मत आना।' यों स्वयं ने तो पैसा माँगना तो बंद किया, किन्तु स्वजनों भी जो चंदा करते थे, वह भी बंद करवाया। यह थी आपश्री के नि:संगपन के पहलू को व्यक्त करने की शुरूआत। स्वयं ने सभी प्रवृत्तिओं को खींच लिया। आश्रम के मुलाकातियों को भी निश्चित * समय के सिवा नहीं मिलते थे। जब उनको लगा की उनका शरीर लोककल्याण के कार्यों में आ सके ऐसा नहीं है, तब शरीर का आनंदपूर्वक त्याग करने का तय किया। देहत्याग पहले का थोड़ा किन्तु पूर्व इतिहास जानना रसप्रद है।

* सुबह को ६ बजे से ९ बजे तक।

।। हरि: ॐ ।।

## १२. देहत्याग का निर्णय

सामान्य रूप से एकाध अपवाद के सिवा पूज्यश्री वर्षों से गुरुपूर्णिमा के समय पर दक्षिण भारत में कुंभकोणम् आश्रम पर रहते थे। वहाँ के स्वजन गुरुपूर्णिमा वहीं पूज्यश्री की उपस्थिति में मनाते थे। किन्तु १९७६ की जुलाई महीने की ग्यारह तारीख को गुरुपूर्णिमा पर पूज्यश्री ने कुंभकोणम् जाने का बंद रखा। बहुत लंबे समय बाद गुरुपूर्णिमा पर पूज्यश्री सूरत आश्रम पर हो ऐसा प्रसंग आया। उन्होंने तो गुरुपूर्णिमा के दिन किसी अज्ञात स्थल पर जाने का विचार कर लिया था। इससे गुरुपूर्णिमा पर आनेवाले उत्सुक ऐसे अनेक मुंबई-अहमदाबाद के स्वजनों को उन्होंने मना कर दिया था, किन्तु सूरत के स्वजनों ने पूज्यश्री को विनती की कि 'गुरुपूर्णिमा के शुभ दिन अनेक वर्षों के बाद आप यहाँ हो तो आप उस दिन आश्रम में ही रहे तो अच्छा रहेगा।' पूज्यश्री ने उनके समाजोत्थान के कार्य के लिए अच्छी रकम मिलती हो तो स्वयं सुबह के ७.३० बजे तक रुकने की अनुमति दी। सूरत के स्वजनों ने २५ हजार रुपये उनके चरणों में अर्पण करने का प्रस्ताव पेश किया। पैसे एकत्रित होने लगे। धीरे-धीरे लक्ष्यांक बदलता गया और ७७ हजार का हुआ। गुरुपूर्णिमा के दिन तक ६७ हजार रुपये एकत्रित हुए। किन्तु गुरुपुर्णिमा की सुबह की प्रार्थना के बाद एक स्वजन खड़े होकर १० हजार देने का जाहिर करते लक्ष्यांक उपर रकम चली गई फिर उसी निमित्त पैसे को जोड़ कर हुए अंक ८५ हजार का हुआ।

।। हरि: ॐ ।।

# १३. निर्णय ठेलाया

उस दिन मुसलाधार वर्षा हुई थी। सूरत शहर का संपूर्ण वाहनव्यवहार बिखर गया था। अहमदाबाद से आनेवाले भक्तों ने सूरत रेलवे स्टेशन पर सुबह डेढ़ बजे उतरते ही विज्ञापन सुना कि अब के बाद अहमदाबाद से आती सभी ट्रेन बंद हैं। क्योंकि कोसंबा (जि.-सूरत) स्टेशन पर पानी भर गया है। पूरा सूरत स्टेशन फूटपाथवासियों और झोंपड़ेवासियों का आश्रयस्थानरूप भरा हुआ था।

सूरत शहर में भी जगह-जगह पानी भर गया था। रत्रि में ओटोरिक्षाएँ बंद थी। सूरत से रांदेर के रास्ते पर भी अनेक मोटरगाडियाँ रास्ते में फँसी हुई थी। ऐसी परिस्थिति में भी ढ़ाई सौ-तीन सौ स्वजन सुबह छ बजे सूरत आश्रम पर पूज्यश्री के दर्शनार्थ उपस्थित थे। प्रार्थना हुई। गुरुवंदना के लिए सब लाइन में खड़े थे। कुछ एक सोचते थे कि ऐसी मूसलाधार वर्षा में पूज्यश्री का जाना बंद रहेगा। किन्तु साढ़े सात बजते ही पूज्यश्री को मोटर में बैठे हुए देखते सभी आश्चर्य में गरकाव हो गये। बहुत कम को पता था कि मोटर का मशीन ठंडा न हो जाय, उसके लिए उन्होंने मोटर का मशीन चालू रखकर गरम कर रखा था। उन्होंने तो निश्चित समय पर आश्रम छोड़ा। सन् १९७६ दि. ११ जुलाई का वह गुरुपूर्णिमा का दिन। उनकी इच्छा वल्लभविद्यानगर में श्री रामभाई और डो. कान्ताबहन के वहाँ जाकर उसी रात्रि में देह छोड़ने की थी। 'हम आयेंगे' इस मतलब का श्री रामभाई को कदाचित् कह भी रखा था। किन्तु 'आप कान्ता को कहना नहीं' ऐसी भी सूचना दी रखी थी। श्री रामभाई ने उस हुक्म का यथार्थ पालन किया था। उनके घर पर देह छोड़ना है, उसके बारे में इशारा तो राम को भी नहीं किया था। पूज्यश्री और श्रीनंदुभाई दो ही जन वह जानते। सुरत आश्रम से निकलने के बाद कडोदरा के रास्ते कोसंबा से आगे नहीं जा सकने से उनको वापस आना पड़ा। वापस आते हुए कडोदरा के बदले भूल से वराछा रोड पर आ गये। वराछा और सूरत के बीच के नाले से आगे एक गली में होकर शहर में प्रवेश करने का प्रयास करते हुए कीचड़वाले पानी भरे हुए खेत में मोटर फँस गई। श्री नंदुभाई के घूमते कार्यालय का कुछ साहित्य मोटर में पानी आ जाने से भीगकर बिगड़ गया। आसपास की सोसायटी के कुछ व्यक्तियों ने पूज्य

श्रीमोटा को पहचान लिए और फँसी हुई मोटर को बाहर निकालने की विनती करने पर भी उन्होंने मदद करने की तत्परता नहीं दिखाई। क्योंकि गहरे-गहरे गुरुपूर्णिमा के दिन अनायास से आये हुए **मोटा** को अपने घर में पधरावनी कराने की इच्छा रही हुई थी। उस मल्लाह ने पैर धोये बिना नाव में बिठाने का श्रीराम को इनकार किया था, जिससे पैर धोने का प्रसंग मिला। कुछ वैसा ही यह प्रसंग था। किन्तु ठोस निश्चय साथ पूज्यश्री तो मोटर में ही सो रहे।

'अब कुछ बात नहीं बनेगी' ऐसा सोचकर फिर सभी ने मदद की और फँसी हुई मोटर को निकाल दी। अंत में करीब चार घंटे के बाद सुरत आश्रम पर दुपहर १२ बजे पहुँचे। सुरत आश्रम के प्रमुख श्री हसमुखभाई रेशमवाला को पूज्यश्री ने सूचना दे रखी थी कि वडोदरा से जो कोई पहली ट्रक आये तो रोड चालू होने का पता हमें तुरंत करना। ऐसी खबर मिलने से दूसरे दिन सुबह दि. १२ जुलाई को सुबह ६.०० बजे सुरत आश्रम से निकले। वडोदरा पहुँचने से पहले दस-बारह मील पहले का गाँव पोर के पास आये, तब विश्वामित्री नदी के ऊपर का वाहनव्यवहार बंद होने से पूज्यश्री ने वडोदरा के अपने कायमी यजमान श्री जयरामभाई देसाई के वहाँ मोटर लेकर गये। वहाँ करीब तीन घंटे आराम करके निकले। किन्तु वडोदरा शहर में से बारिश का पानी अभी उतरे नहीं थे। पुलिस कोई भी वाहन को आगे जाने नहीं देते थे। किन्तु वडोदरा के पूर्व मेयर श्री ललितभाई ने श्रीमोटा को मोटर में देखे और आगे जाने देने की व्यवस्था की।

किन्तु छानी के आगे बहुत पानी भरा हुआ होने के कारण रास्ते बंद होने से पूज्यश्री ने मोटर अपने स्वजन एलेम्बिकवाले श्री रमणभाई अमीन के वहाँ ले गये। श्री रमणभाई अमीन के वहाँ आधा घंटा रुककर के उनके पुत्र श्री चिरायुभाई को रास्ता दिखाने पाइलटकार के रूप में आगे रखे और पीछे के रीफाइनरीवाले रास्ते से जी. एस. एफ. सी. के पास से हाइवे पर निकले। अगले दिन श्री रामभाई को आने को कहा था, इससे उनके वहाँ से डो. कांताबहन और श्री रामभाई को नडियाद आश्रम में सेवा में रखने साथ लेकर शाम को सात बजे आश्रम पहुँचने से पूरे दिन के प्रवास का भारी श्रम पूज्यश्री को सहन करना पड़ा और बाद के दो-तीन दिन तक उनकी सुखाकारी को बाधक बना।

।। हरि: ॐ ।।

## १४. स्वास्थ्य बिगड़ा

ऐसे नादुरस्त स्वास्थ्य के होते हुए भी दिनांक १३-१४-१५ जुलाई को तो पूज्य श्रीमोटा ने आश्रम में नियमित आनेवाले स्वजनों को मिलने के लिए समय दिया। दिनांक १६ जुलाई को प्रोस्टेट का दर्द बहुत तीव्र हुआ। ३६ घंटे तक पिशाब नहीं हुआ। इससे पूज्यश्री की 'ना' होते हुए भी डो. कांताबहन ने स्वयं डोक्टर होने से अपनी जवाबदारी समझकर नडियाद के सुप्रसिद्ध युरोलोजिस्ट डो. वीरेन्द्रभाई देसाई को बुलाने का तय किया। कार्य कठिन था। उस दिन शेढी नदी में भारी बाढ़ थी। मुख्य रास्ते को जोड़नेवाले आश्रम के रास्ते पर सिर डूब जाय इतना गहरा पानी था। आखिर आश्रम के पीछे के रास्ते घुटने तक के पानी में कीचड़ में से होते हुए बहुत देर से डो. कांताबहन मुख्य रास्ते पर पहुँचे। वहाँ आश्रम के हररोज के मुलाकाती स्वजन श्री विष्णुभाई पटेल कार लेकर जा रहे थे। डो. कांताबहन विष्णुभाई की कार में डो. वीरेन्द्रभाई के पास पहुँचे। डो. वीरेन्द्रभाई ने तो यदि रस्सा के साथ लकड़ी बाँधकर आश्रम की तरफ से मुख्य रास्ते पर डालने में आयें तो उस लकड़ी पकड़कर रस्सा से खिंचकर तैरते-तैरते आने की भी तत्परता दिखाई। यद्यपि ऐसा करने की आवश्यकता नहीं हुई। पीछे के रास्ते से घुटने तक के कीचड़ और पानी में से होते हुए डो. वीरेन्द्रभाई आश्रम में आये। उन्होंने केथेटर रखा और थोड़ा पिशाब करवाया। दूसरे दिन दिनांक १८ को भी डो. वीरेन्द्रभाई आये। वहाँ तक में केथेटर द्वारा २।। - ३ लिटर जितना पिशाब एकत्रित हो गया था। उसके बाद पूज्यश्री हलके हुए। उनके शरीर पर की सूजन कम हो गई थी।

।। हरि: ॐ ।।

## १५. देहत्याग के पूर्व

१९ जुलाई को पूज्यश्री ने आश्रम का लेटरपेड माँगा और श्री नंदुभाई को बुलाया और उनकी उपस्थिति में सुबह १०.३० बजे एक पत्र लिखा और अपने चश्मे के बोक्स में रखा। दिनांक २०-२१ की सुबह आश्रम आनेवाले सभी को १०-१० मिनट मिलने की अनुमति दी गई। दिनांक २१ की शाम को पूज्य श्रीमोटा ने नडियाद आश्रम में व्हीलचेर में अपने को घूमाने के लिए राजुभाई को कहा। पूज्य श्रीमोटा को व्हीलचेर में बिठाकर राजुभाई ने आश्रम में घूमाये, तब वहाँ के एक-एक पौधे, वृक्ष और सभी वनस्पति को आपश्री ने दो हाथ जोड़कर प्रणाम किये। मानो उन सब की विदाय लेते हो। वह क्रिया इतनी सहजरूप से की थी कि राजुभाई को भी उसका विस्मय या कौतुक न जागा। घूमते-घूमते सुचना दी कि 'यह नाहने का टब जिसका है, उसे पहुँचा देना।' तब राजुभाई ने कहा,'**मोटा**'! हम वापस आयेंगे तब जरूरत होगी न? उस बात को मोड़ते हुए पूज्यश्री ने जवाब दिया 'तब वापस मँगवा लेंगे।'

दिनांक २२ जुलाई को समयपत्रक के अनुसार फाझलपुर जाना था। जल्दी सुबह २-२।। बजे से पूज्य श्रीमोटा ने डो. कांताबहन को जगाना शुरू किया। स्वयं भी जल्दी करके तैयार हो गये, और दूसरे सब को भी जल्दी से तैयार करके पाँच बजे निकले। उस वक्त मूसलाधार बारिश हो रही थी। इससे चार कोने पर चार जनोंने तिरपाल पकड़कर उसके नीचे से ले जाकर उन्हें कार में बिठाया। पूज्यश्री तो उनकी मर्सीडीझ गाड़ी में थे। साथ में श्री रामभाई और श्री नंदुभाई थे। राजुभाई, डो. कांताबहन की फियाट कार में थे। डो. कांताबहन की कार पाइलट कार की तरह आगे जा रही थी। रोड पर जैसे पहुँचे कि आश्रम की सभी लाइट बंद हो गई। ग्रीड में से सीधा कनेक्शन मिला होने से इस प्रकार बंद हो जाना संभव नहीं था। इससे आश्रमवासियों को कुछ अयोग्य होने की निशानी लगी। महागुजरात अस्पताल के पास और कोलेज रोड पर पानी होने के कारण संतराम-विठ्ठल कन्या विद्यालय के रास्ते जो फाटक आता है, वहाँ से बाहर जाते हुए हाइवे पर निकले। कई जगहों पर बहुत पानी था। डो. कांताबहन की फियाट कार उस पानी में से किस प्रकार सहीसलामत निकली

उसका आश्चर्य डो. कांताबहन को हुआ था। रास्ते में कार में पूज्यश्री **मोटा** ने देहत्याग करने के संबंध में श्री रमणभाई की अनुमति तुरंत ही प्राप्त कर लेने के लिए श्री नंदुभाई को कहा। श्री रमणभाई और श्रीमती धीरजबहन सुबह ६ बजे स्वागत के लिए फाझलपुर में उपस्थित थे। श्री नंदुभाई ने श्री रमणभाई को कहा,'आप अनुमति दो तो पूज्यश्री को यहाँ देहत्याग करना है। आपकी अनुमति नहीं होगी तो फिर सूरत आश्रम पर जाकर देहत्याग करेंगे।' श्री रमणभाई ने कहा,'यह घर पूज्यश्री का है। उनकी जैसी इच्छा हो वैसा करे।' उस वक्त श्री रमणभाई को ख्याल नहीं था कि आज ही देहत्याग करेंगे। हमेशा की तरह उस दिन पूज्यश्री सब के साथ भोजन करने नहीं बैठे। कांताबहन को कुछ बनाकर लाने को कहा। डो. कांताबहन सूरन उबाल कर ले आये, उसमें से पूज्यश्री ने मुश्किल से एक टुकड़ा खाया होगा।

।। हरि:ॐ ।।

## १६. देहत्याग

आठेक बजे पूज्यश्री ने अपने गले की कंठी और हाथ की घड़ी श्रीनंदुभाई को देकर तय कर दिया कि आज देहत्याग करना है। श्री नंदुभाई ने निरूपण किया कि,'आज ऐसी मुसलाधार बारिश है, तो चिता इत्यादि जलाने में मुश्किल होगी। मही नदी में भारी बाढ़ है। दो-तीन दिन रुक जाँय तो? पूज्यश्री ने दृढ़ अवाज से जवाब दिया,''अग्निसंस्कार करना मुश्किल हो तो देह नदी में बहा देना। मैंने तय कर दिया है। This is not a matter of discussion.''

११ बजे उन्होंने दूसरे तीनेक पत्र लिखे। उसमें एक में इस प्रकार लिखा,'गुरुमहाराज जीवंत प्राणी है, ऐसा नहीं है। वे तो उन्हें या हमें जरूरत हो, मनुष्य जैसे होकर हमारे सामने आकर सब कुछ अपना समाधान कर देते हैं।' दूसरे पत्र में उन्होंने उनको मदद करनेवालों का आभार मानकर 'भगवान उनका यश कल्याण करे' ऐसी प्रार्थना की है और तीसरे में उन्होंने जो पुस्तक लिखे हैं, उसके पीछे की अपनी भावना और पद्धति को डोलनशैली में पेश की है।

उसी दिन ही संयोगवशात् श्री रमणभाई के फार्महाउस के दरवाजे के लिए मारबल की तख्ती 'हरिस्मृति' आई और उसे दरवाजे के स्तंभ पर लगाई गई। ३ बजे सदैव आते थे, उस अनुसार श्री रमणभाई के परिवार के सभ्य, बालक इत्यादि पूज्यश्री से मिलने आये। उन सब से प्रेम से मिले तो सही, किन्तु जल्दी से उन सब को बिदा करवाये। ४ बजे उन्हों ने अपने को बरामदे में से अंदर कमरे में ले जाने को कहा। **फिर श्री नंदुभाई को अकेले बुलाकर सात-आठ मिनट बात की। उस वक्त श्री नंदुभाई ने किसी आंतरिक सहज प्रेरणा द्वारा पूज्य श्रीमोटा को कहा,'मैं आपके बाद आश्रमों में ही रहूँगा और आश्रमों को संभालूँगा *। पूज्यश्री ने आँखो द्वारा संतोष प्रकट किया। यह एक सूचक प्रसंग है। क्योंकि श्री नंदुभाई श्रीमोटा को बार-बार कहते, My loyalty is primarily towards you and accordingly towards the ashrams as I do not identity myself**

* किन्तु श्री नंदुभाई हरि:ॐ आश्रम, सूरत और नडियाद के ट्रस्टीपद से करीब मार्च १९८८ में त्यागपत्र देकर दि. २०/४/१९८८ से सु.श्री. चंदनबहन पटेल, वल्लभ विद्यानगर (जि.आणंद, गुजरात) के वहाँ निवास करने चले गये थे।

**with the ashrams उस समय श्री नंदुभाई ने तो पहले से सोच भी रखा था कि श्रीमोटा के देहत्याग के बाद एक-दो वर्ष में इन आश्रमों का समग्र कारोबार व्यवस्थित करके कुंभकोणम् आश्रम पर स्थायी रूप से रहने चले जाना। इस बात के संदर्भ में पूज्यश्री के साथ के अंतिम मिलन में उस धन्य पल में श्री नंदुभाई का निर्णय किस प्रकार बदल गया और अचानक कैसे व्यक्त हुआ उसका सभान ख्याल श्री नंदुभाई को बिलकुल नहीं आया। बिलकुल सहज प्रकार यह हो गया। उसमें पूज्यश्री की कोई रहस्यमय लीला क्यों न हो!**

श्री नंदुभाई के साथ बात पूरी करने के बाद अन्य पाँचों जनों को अंदर बुलाया। पूज्यश्री ने सूचना दी,' आपको अंदर बैठना हो तो अंदर बैठे, बाहर बैठना हो तो बाहर बैठे। अब मुझे कोई बुलाना मत और कोई छूना मत। यह केथेटर को मेरे शरीर पर से दूर मत करना। यह मेरी जीवनसंगिनी है।' सब ने पूज्यश्री के कमरे में बैठना पसंद किया। कमरा बंद किया और सब ने अपनी-अपनी रीति से हरि:ॐ का जप शुरू किया। लगभग १२ बजे श्री नंदुभाई को सहज विचार आया कि श्रीमोटा शायद १.३० बजे प्राण छोडेंगे। क्योंकि पूज्य श्रीअरविंद ने भी शुक्रवार सुबह १.३० बजे देह छोड़ा था। रात्रि १२.३० बजे डो. कांताबहन ने पूज्यश्री की नाड़ी की धड़कन गीनी। ३० से ३५ थी। १-१५ बजे श्री रामभाई ने सहज शरीर का स्पंदन होते देखा। १.२५ बजे देह छूट गया। शरीर पर कोई उग्र चिह्न दिखा नहीं। भीष्म पितामह की इच्छामृत्यु की बात पढ़ी थी, किन्तु रोगों की बाणशय्या पर सोये हुए पूज्य श्रीमोटा का यह इच्छामृत्यु का प्रसंग हमारी उपस्थिति में हुआ, यह एक अनोखी घटना है।

श्री रमणभाई और फार्म मेनेजर श्रीछगनभाई सुबह ४ बजे चिता की जगह तय करके आये थे। मही नदी के किनारे पर जगह तय की थी।

।। हरि:ॐ ।।

## १७. वसीयतनामा

श्री नंदुभाई प्रेस के लिए संदेश इत्यादि लिखने में मग्न हुए। अंतिम क्रिया करने में पूज्यश्री के आदेश को मान देना था। दिनांक १९-७-१९७६ को नडियाद आश्रम में लिखे गये पत्र में वह आदेश था। वह एक वसीयतनामा समान है और लाक्षणिक शैली में लिखा गया है:

जिस किसी का इस संदर्भ में संबंध हो उनके लिए –

मैं, चूनीलाल आशाराम भगत उर्फ़ **मोटा** निवासी हरि:ॐ आश्रम, नडियाद इससे बताता हूँ कि मेरी राजीखुशी से मैं अपने आप मेरे जड़ देह को छोड़ना चाहता हूँ। यह देह अनेक रोगों से घीरा हुआ है और अब लोककल्याण के काम में आ सके ऐसा नहीं है। रोग मिटने की भी आशा नहीं है। इससे आनंदपूर्वक शरीर छोड़ना ही उत्तम है और उसके लिए योग्य पल लगेगी, तब मैं ऐसा कर लूँगा।

मेरे शरीर का अग्निसंस्कार एकांत में, शांत जगह पर, मृत्युस्थल के बिलकुल पास में करना और वह भी आप छ जनें * की उपस्थिति में ही करना। बहुत इकट्ठे नहीं करना वैसा मेरे सेवकों को मैं आदेश देता हूँ।

मेरे अस्थि को भी नदी में पूरे पधरा देना।

**मेरे नाम का ईंट-चूने का कोई स्मारक नहीं करना। मेरी मृत्यु निमित्त से जो कुछ फंड एकत्रित हो, उसका उपयोग गाँवों में शाला के कमरे बँधवाने में करना।'**

– चूनीलाल आशाराम भगत उर्फ **मोटा**

दिनांक १९-७-१९७६

* * * *

* वे छ जनें : (१) श्रीनंदुभाई (२) श्रीरमणभाई अमीन (३) श्रीमती घीरजबहन अमीन (४) श्रीरामभाई पटेल (५) डो.कान्ताबहन पटेल (६) श्रीराजेन्द्रभाई (राजुभाई) पटेल

।। हरि:ॐ ।।

# १८. अंतिम विधि

मही नदी के दक्षिण किनारे की कगार पर ही श्री रमणभाई का बंगला और उसके आगे बगीचा बना हुआ है। वहाँ से उतरने की एक पगडंडी थी। किसी दिव्य संकेतानुसार दो–तीन महीने पहले ही १ ।। फीट की उस संकरी पगडंडी को ३ फूट चौड़ी की थी। दो मनुष्य एक साथ सरलता से जा सके ऐसा रास्ता श्री रमणभाई ने बनवाया था। इससे फार्महाउस के कम्पाउन्ड के बाहर गये बिना ही सीधे नदी किनारे उतरा जा सके ऐसा था। मृत्युस्थल के बिलकुल पास अग्निसंस्कार करने के पूज्यश्री के आदेश का इस प्रकार पालन हुआ।

सोने के उपयोग में आनेवाले अेल्युमिनियम के वजन में हलके पलंग में पूज्यश्री के देह को नीचे ले जाया गया। मही नदी का पानी तेज़ी से बढ़ता जा रहा होने से मूल तय की गई जगह बदलकर थोड़े ऊपर के हिस्से में चिता तैयार की गई थी। देह को नीचे ले जाते समय न तो कोई अगरबत्ती जलाने में आई थी, न तो चंदन की लकड़ी रखने में आई थी। गंगाजल का छींटा भी डालने में न आया था। प्रणालिकागत विचारों को कैसी तिलांजलि। गतानुगतिक विधि का कैसा त्याग ! सूक्ष्म को महत्त्व, स्थूल को नहीं, यह बाबत इससे स्पष्ट होती है।

चिता पर देह को सुलाते समय श्री रामभाई बोल उठे, **मोटा** तो नागाबाबा की जमात के गिने जाते हैं। इससे देह पर रहा हुआ एकमात्र वस्त्र भी ले लिया गया। श्री रमणभाई ने अग्निसंस्कार किये। दो घंटे में तो देह पंचभूत में विलीन हो गया। उनके अंतिम अवशेष अस्थि और राख को फार्म मेनेजर श्री छगनभाई और श्री राजुभाई ने पूज्यश्री के आदेश अनुसार मही नदी में बहा दिये। दो बहनों से सहज सीसकियाँ निकल गई, तब अन्य व्यक्ति भी थोड़े गंभीर हुए। अन्यथा मृत्यु और जन्म एक ही सिक्के के दो पहलू उन्होंने गिन लिए थे।

९.४५ बजे फाजलपुर में सब ने भोजन किया। श्री रमणभाई और श्रीमती धीरजबहन वडोदरा गये। श्री नंदुभाई अकेले आश्रम पर आये। कुछ ही देर में बात फैलने लगी और आश्रम में लोकप्रवाह बहने लगा।

।। हरि:ॐ ।।

## १९. अंतिम आदेश का पालन

पूज्यश्री के देहविलय के बाद उनके अंतिम आदेश को मान देकर जो कुछ रकम मृत्यु के निमित्त एकत्रित हो, वह बिलकुल छोटे गाँवों में शाला के कमरे बनाने में खर्च करने का निर्णय हरि:ॐ आश्रम सूरत-नडियाद ने किया। आरंभ में तो ऐसा सोचा था कि १२-१३ दिन में जो कुछ रकम आयेगी उसे इस तरह दे देंगे। किन्तु श्री इन्दुभाई शेरदलाल की स्वयंस्फुरित प्रेरणा से अहमदाबाद के पूज्य श्रीमोटा हरि:ॐ सत्संग मंडल के स्वजनों ने श्री इन्दुभाई शेरदलाल की उस प्रेरणा को मूर्तस्वरूप देने उनके और श्री लक्ष्मीकांत अमीन के मार्गदर्शन नीचे आयोजनपूर्वक एक विशिष्ट आंदोलन शुरू किया और बहुत अच्छी रकम एकत्रित की।

उसमें से जो प्रेरणास्फुलिंग पैदा हुए उसके कारण से आणंद में, खेड़ा जिले के एक-दो गाँव में, वडोदरा, सूरत और मुंबई आदि स्थानों पर स्वजनों ने वह काम सिर पर ले लिया। यह प्रवृत्ति आठेक महीने बहुत वेग से चली। योजनापूर्वक रकम एकत्रित करने का काम वर्तमान में बंद है। किन्तु अपने-आप दान का प्रवाह तो अब भी एक-सा आश्रम में बहा ही करता है। कुछ एक बार तो आश्रम के साथ किसी भी प्रकार का परिचय न हो, ऐसी व्यक्तियों की ओर से बड़ी-बड़ी रकम के दान मिलते जाते हैं। उसके परिणाम से समग्र गुजरात में कच्छ से लेकर बलसाड तक और उत्तर गुजरात के भी सभी जिले को लेकर १८५ (१ करोड ४६ लाख होने जाता है) तहसील को आज तक दी हुई रकम। यह एक विस्मयकारक अनोखी घटना बनी है।

पूज्यश्री के अनेक बार बोले हुए शब्द कर्णपट पर गुंजारव करते सुनाई देते हैं,'देखना न! मेरा शरीर जाने के बाद में आश्रम के दरवाजे पर पैसे का ढेर हो जाएगा।' कितना यथार्थ भविष्यकथन!

हरि:ॐ आश्रम, नडियाद - दि. २४/०८/१९७८

**नोट:** दिनांक ३१/०६/२००९ तक लोककल्याण की प्रवृत्ति में रु १४ करोड का दान देने में आया है।

- प्रकाशक

।। हरि:ॐ ।।

## आरती

ॐ शरणचरण लीजिए, प्रभु शरणचरण लीजिए
पतित को उबार लीजिए (२) कर पकड़ हृदय लगा ल्रीजिए...
ॐ शरणचरण.

मन-वाणी के भाव आचरण में उतरें प्रभु (२)
मन, वाणी और दिल को (२) कृपा कर एक करें...
ॐ शरणचरण.

सभी स्वजनों के साथ, दिल में सद्भाव जगें, प्रभु (२)
भले अपमान हुए हो (२) तब भी भाव बढ़े...
ॐ शरणचरण.

हीन प्रकार की वृत्ति; ऊर्ध्वगमन करें, प्रभु (२)
प्रभुकृपा से मथन करावें (२) चरणशरण पाने...
ॐ शरणचरण.

मन के सकल विकार, प्राणयुक्त वृत्ति, प्रभु (२)
बुद्धि की सभी शंकाएँ (२) चरणकमल में द्रवित हो...
ॐ शरणचरण.

जैसे भी हो प्रभु, वैसे ही दिखें, प्रभु (२)
मति मेरी खुली रहे (२) स्पष्ट ही परखें...
ॐ शरणचरण.

दिल में कुछ भरा हो, उससे सब उल्टा, प्रभु (२)
मुझसे कभी न हो (२) ऐसी मति दें...
ॐ शरणचरण.

जहाँ जहाँ गुण और भाव, वहीं दिल मेरा टिके, प्रभु (२)
गुण और भाव की भक्ति (२) मेरे दिल में संचरित करें...
ॐ शरणचरण.

मन, मति, प्राण प्रभु । तुम्हारे भाव में तल्लीन रहे, प्रभु (२)
दिल में तुम्हारी भक्ति में (२) उमंगें-तरंगित करें...
ॐ शरणचरण.

**- मोटा**

।। हरि: ॐ ।।

## साधना-मर्म

१. मुख से या मन में जागृत रूप से जप, साथ ही हृदय-प्रदेश पर ध्यान तथा चेतना के साथ चिंतन सह भावनात्मक भाव का रटन।

२. प्रत्येक क्षण में सतत समर्पण : अच्छे तथा बुरे दोनों का।

३. साक्षीभाव, जागृति, विचारों की श्रृंखला न जोड़ें।

४. हो सके उतना अधिक वाचिक और मानसिक मौन रखें, अभ्यस्त हो, अत्यधिक शरणभाव से जीवन में चेतनापूर्वक जागृति को व्यवस्थित करें।

५. आग्रह प्रभु-चिंतन के अलावा सभी आग्रहों को छोड़ें, नम्रता रखें, शून्य होने का ध्येय रखें।

६. बहुत भावपूर्ण हृदयस्थ हो आर्द्र और आर्तभाव से प्रार्थना करें, भगवान को सभी सुख-दु:ख बतलाते रहें, उनके साथ आत्मनिवेदन द्वारा बहुत गहरा व्यक्तिगत संबंध स्थापित करें, मन में कुछ भी विचार न आने दें।

७. जो भी कर्य करें प्रभु के हैं समझकर करें - जरा भी संकोच किए बिना उसे बहुत प्रेमपूर्वक करें। प्रत्येक प्रसंग, घटना हमारे कल्याण के लिए ही है और प्रत्येक प्रवृत्ति हमारे अपने विकास के लिए है। प्रत्येक प्रसंग के पीछे प्रभु का गूढ शुभ संकेत छिपा है।

८. आत्मलक्षी-अंतर्मुखी बनें, मात्र अपनी दुनिया में रहें । जान बुझकर अपने आपको न उलझने दें।

९. अन्य की सेवा ही प्रभु सेवा समझें, सेवा लेनेवाले, सेवा देनेवाले पर, सेवा करने का अवसर देकर उपकार करते हैं। राम ने दिया है और राम को दे रहे हैं, वहाँ मेरा-मेरा कहाँ रहा ? तुम्हारा इस जगत में है क्या ?

१०. प्रत्येक कार्य, प्रत्येक बातचीत, व्यवहार हमारे ध्येय को गति दे ऐसे उद्देश्य को लक्ष्य में रखकर करें। पढ़ते-लिखते समय और प्रत्येक कर्म करते समय भाव की स्मरण धारणाओं का अभ्यास करते रहें।

११. वृत्ति का मूल खोजें, उसका पृथक्करण करें। उसमें खोये बिना, उसका तटस्थतापूर्वक और स्वस्थतापूर्वक निरीक्षण करें।

१२. प्रभु की प्रत्येक कला, सौन्दर्य, रम्यता, विशुद्धता आदि प्रभु के वरदानों में रहे भाव उसके अनुरूप भाव का हमारे में अवतरण हो ऐसी प्रार्थना करें।

१३. उमंग, आवेश और प्रेमभाव को ऐसे ही न जाने दें, साथ ही उसमें डूब भी न जाएँ। उसका साधना में उपयोग करें, तटस्थता बनाए रखें।

१४. खाते और पानी पीते हुए जीवन में चेतन शक्ति का तन्मय भाव से प्रार्थना करें, शौच, पेशाब आदि क्रियाओं के समय विकारों, कमजोरियों इत्यादि का विसर्जन के भाव से प्रार्थना करें।

१५. स्थूलता को त्यागकर सूक्ष्म तत्त्व को ध्यान में रखें। वृत्ति की शुद्धि करें, भाव की वृद्धि करें।

१६. प्रभु सचराचर है। 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की भावना रखें।

१७. प्रत्येक व्यक्ति और वस्तु के उज्ज्वल पक्ष को ही देखें। किसी के भी काजी न बनें, किसी को भी जल्दी से अभिप्राय न दें, वाद विवाद न करें, अपना आग्रह न रखें, दूसरों के शुभ उद्देश्य में मदद करें, मानसिक और सार्वत्रिक उदारता जीवन में प्रगट करें, अत्यधिक प्रेमभाव बनाए रखें, प्रकृति का रूपान्तर करना है, प्रकृतिवश सहज न होनेवाले कर्मों को नजरअंदज कर आगे बढ़ें, फल की आसक्ति त्यागें, स्वयं पर होते अन्यायों, आ पड़ती कठिनाइयों आदि का मूल हम में ही है, ऐसा दृढ़तापूर्वक मानें, गुरु में प्रेम भक्तिभाव को बनाते रहें, तटस्थता, समता और समर्पण के त्रिवेणी संगम को नित्य बनाए रखें, सदा प्रसन्नता बनाए रखें, कृपा और पुरुषार्थ के युगल को जीवन में उतारें, प्रत्येक कर्म के आदि, मध्य और अंत में प्रभु की स्मृति बनाए रखें, मन को नि:स्पंद करें, रागद्वेष निर्मूल करने की जागृति सदैव रखें, आध्यात्मिक अनुभवों को नित्य के जीवन में आचरण में लावें, कहीं भी किसी भी दायित्व से भागें नहीं, जो भी प्रभु-इच्छा से प्राप्त हो उसे प्रभुप्रसाद समझ कर प्रसन्नता से लें। कहीं भी किसी से तुलना या ईर्ष्या न करें, अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति यह मन का भ्रम है, जीवन-साधना के लिए सब कुछ सानुकूल ही होता है, प्रभुमय - उनके मूक यंत्र - होने की एक तमन्ना जीवन में बनाए रखें।

१८. कर्म में, कर्म का महत्त्व नहीं है, परंतु जीवन के भाव का सतत एक समान, सजग चिंतन रहा करें, यह विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। ऐसा सजग अध्ययन कर्म करते हुए प्रत्येक क्षण में बनाए रखें।

**- श्रीमोटा**

।। हरि:ॐ ।।

# पूज्य श्रीमोटा के जीवन का परिचय

| | |
|---|---|
| जन्म | : ता. ४.९.१८९८ भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी, संवत १९५४ |
| स्थान | : सावली, जिल्ला - वडोदरा (गुजरात)। |
| नाम | : श्री चूनीलाल |
| माता | : श्रीमती सूरजबा |
| पिता | : श्री आशाराम |
| जाति | : भावसार |
| १९१६ | : पिता की मृत्यु। |
| १९०५ से १९१८ | : टुकड़ों में पढ़ाई के साथ कठिन मजदूरी। |
| १९१९ | : मैट्रिक उत्तीर्ण। |
| १९१९-२० | : वडोदरा कॉलेज में। |
| दि. ६.४.१९२१ | : कॉलेज का त्याग। |
| १९२१ | : गुजरात विद्यापीठ। |
| १९२१ | : विद्यापीठ का त्याग। हरिजन सेवा का आरंभ। |
| १९२२ | : मिरगी की बीमारी से तंग आकर गरुड़ेश्वर की चट्टान से आत्महत्या का प्रयास, दैवी रक्षा; 'हरि:ॐ' जप से रोग मिटाने का सफल प्रयोग। |
| १९२३ | : 'तुज चरणे' तथा 'मनने' की रचना। |
| १९२३ | : वसंतपंचमी को पूज्य श्रीबालयोगीजी द्वारा दीक्षा।<br>श्रीसद्गुरु केशवानंद धूणीवाले दादा के दर्शन के लिए सांईखेड़ा गए। रात्रि को स्मशान में साधना और दिनभर प्रभुप्रीत्यर्थ हरिजन सेवा। |
| १९२६ | : विवाह-हस्तमिलाप के अवसर पर समाधि का अनुभव । |
| १९२७ | : हरिजन आश्रम, बोदाल में सर्पदंश - परिणाम स्वरूप 'हरि:ॐ' जप अखंड हुआ। |
| १९२८ | : 'तुज चरणे' के प्रथम संस्करण का प्रकाशन। |

१९२८ : प्रथम हिमालय – यात्रा।

१९२८ : साकोरी के पूज्य श्रीउपासनीबाबा का नडियाद में आगमन, उनके आदेश पर साकोरी गये, वहाँ मलमूत्र के बिस्तर में सात दिन।

१९३० : मन की नीरवता का साक्षात्कार।

१९३० से ३२ : इस दौरान साबरमती, विसापुर, नासिक और यरवडा जेल में। उद्देश्य देशसेवा का नहीं, साधना का। कठोर परिश्रम और लाठी चार्ज के दौरान प्रभुस्मरण – मौन। विद्यार्थियों को समझाने के लिए विसापुर जेल में सरल गुजराती भाषा में श्रीमद् भागवद्गीता को लिखा – 'जीवनगीता'।

१९३४ : सगुण ब्रह्म का साक्षात्कार।

१९३४ से १९३९ : इस दौरान हिमालय में अघोरीबाबा के पास जाना हुआ। बाद में नर्मदा धुंवाधार के झरने के पीछे की गुफा में साधना। चैत्र मास में २१ उपलों की ६३ धुनियाँ प्रज्वलित की, नर्मदा किनारे खुले में शिला पर नग्न बैठकर साधना; शीरडी के सांईबाबा के प्रत्यक्ष दर्शन–आदेश–साधना के अंतिम चरण का मार्गदर्शन।

१९३९ : दि. २९.३.३९ : रामनवमी संवत १९९५ काशी में निर्गुण ब्रह्म का साक्षात्कार। हरिजन सेवक संघ से त्यागपत्र। 'मनने' के प्रथम संस्करण का प्रकाशन।

१९४० : दि. ९.९.४० : हवाई मार्ग से अहमदाबाद से कराँची जाने का गूढ़ आदेश।

१९४१ : माता का अवसान।

१९४२ : हरिजन सेवक संघ से अलग होने पर भी हरिजन कन्या छात्रालय के लिए मुंबई में चन्दा इकट्ठा किया। दो बार सख्त पुलिसमार – देहातीत अवस्था के प्रमाण।